परिशिष्ट

बलियाँ

गिनती की पुस्तक में बलियों को प्रमुखता के साथ - और विशेष रूप से अध्याय 15, 28, और 29 में देखा जा सकता है। परमेश्वर के लोगों के जीवन में बलियों का क्रम एक केन्द्र भाग रखता था और इस विषय पर पुराना नियम परमेश्वर और वर्तमान के मसीही लोगों के बीच अन्तर्दृष्टि उपलब्ध करवाता है।

उद्भव और स्थान

हालांकि मूसा की व्यवस्था के द्वारा बलियाँ आवश्यक थीं फिर भी उनका उद्भव व्यवस्था से नहीं हुआ। कैन और हाबिल प्रभु के सम्मुख बलियाँ लेकर आए (उत्पत्ति 4:3, 4)। नूह (उत्पत्ति 8:20), याकूब (उत्पत्ति 31:54) और अन्य लोगों ने परमेश्वर के सम्मुख बलियाँ अर्पित की। इस कारण हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर ने आरम्भ से अपने लोगों पर प्रकट किया कि उन्हें परमेश्वर के सम्मुख क्या अर्पित करना चाहिए।

प्राचीन समय में इस्राएलियों के अतिरिक्त अन्य संस्कृतियों में भी बलियाँ अर्पित की जाती थीं। वास्तव में अनेक युगों से उन लोगों के द्वारा बलियाँ अर्पित की जाती रही हैं जो प्रभु में विश्वास नहीं रखते थे (उदाहरण के लिए देखें, 1 राजा 18 में बाल के नबियों की बलियाँ)। पूर्वानुमान के अनुसार, इस प्रकार की संस्कृतियों में बलिदानों का विचार, जैसे कि एक सृष्टिकर्ता का होना, परमेश्वर के द्वारा मनुष्य पर मूल रूप से प्रकाशित सत्य का पता बताता है जो अन्त में एक दूषित व्यवस्था में विकृत कर दिया गया जिसमें अन्य जाति देवताओं को बलिदान चढ़ाना शामिल है (देखें रोम. 1:18-32)।

बलियाँ मनुष्य के आरम्भिक दिनों से होने की दिनांक प्रदान करती हैं इस कारण जो व्यवस्था उन्हें मूसा के नियमों के अन्तर्गत देखती थी वह निश्चित रूप से दो उद्देश्य रखती थी (निर्गमन - व्यवस्थाविवरण): (1) जो अर्पित की जा चुकी उन्हें नियमित किया जा सके और (2) यह वर्णन करने के लिए कि उन्हें मिलापवाले तम्बू की व्यवस्था से किस प्रकार जोड़ा जाए। उदाहरण के लिए, परमेश्वर के लिए यह आवश्यक नहीं था कि सीनै में और जंगल में जो व्यवस्था उसने दी उसमें "होम बलि" या "मेल बलि" को परिभाषित करे क्योंकि लोग पहले से ही उनके बारे में जानकारी रखते थे।

मूल रुप से, बलियाँ कहीं पर भी अर्पित की जा सकती हैं। परमेश्वर के आराधकों ने अनेक स्थानों में वेदियाँ बनाई और बलियाँ चढ़ाई। उदाहरण के लिए, अब्राहम ने प्रभु के लिए वेदियाँ बनाई (उत्पत्ति 12:7, 8; 13:4, 18)। पूर्वानुमान के अनुसार, उसने बलियाँ चढ़ाने के लिए उनका प्रयोग किया। जब व्यवस्था दी

गई तब इसने आराधना का एक केन्द्र स्थान प्रदान किया: पहले मिलापवाला तम्बू और बाद में मन्दिर। इन केन्द्रीय स्थानों में परमेश्वर एक विशेष भाव में उपस्थित था।

यहाँ तक कि मिलापवाले तम्बू की आराधना स्थापित करने के बाद भी कुछ बलियाँ इस्राएल के प्राथमिक पवित्रस्थान से अलग भी निरन्तर की जाती रही।[1]इन "खुले आकाश" की वेदियों,[2] अथवा "निर्जल" वेदियों[3] का प्रयोग होम बलियों और मेल बलियों के लिए किया जाता था। निर्गमन 20:24-26 में बताई गई वेदियों के विषय में दी गई व्यवस्था शायद इन "खुले आकाश" की वेदियों अथवा "निर्जल" वेदियों के साथ सम्बन्ध बताती है। इस्राएलियों के द्वारा वायदे के देश में प्रवेश के बाद परमेश्वर ने ऊपरी तौर पर यरूशलेम के मन्दिर में चढ़ाई जाने वाली बलियों के अतिरिक्त वेदियों पर बलियाँ चढ़ाए जाने को समाप्त नहीं किया। रिचर्ड ई. एवरबेक ने लिखा,

> ऐसा देखने को मिलता है कि हालांकि इस्राएल के मध्य में मिलापवाला तम्बू जंगल के समय में एक केन्द्रीकृत आराधना का स्थान था (लैव्य. 17:1-7) और पवित्र देश से इस्राएल के व्यवसाय के आरम्भ से आराधना का एक केन्द्रीकृत आदर्श अस्तित्व में था (व्यव. 12) फिर भी "जिस किसी स्थान पर" प्रभु चाहता था कि वहाँ उसके नाम का स्मरण किया जाए वहाँ पर भूमि या पत्थर की निर्जन वेदियों पर प्रभु को होम या मेलबलियाँ अर्पित करना भी वैध था (निर्गमन 20:24, 25)।…
>
> … मिलापवाले तम्बू में (और बाद में मन्दिर में) पाँच मुख्य प्रकार की बलियों और भेंटों की याजकीय व्यवस्था निर्जन वेदियों से भिन्न थी जो मात्र होमबलियों और मेलबलियों तक ही सीमित थी। साथ ही ये दोनों प्रकार की व्यवस्थाएँ वास्तव में वैधता के साथ इस्राएली इतिहास के निर्गमन से पूर्व के अनेक समय में कार्यशील रह सकी और रही।[4]

प्रतिभागी

वे कौन थे जिन्होंने बलियाँ चढ़ाई? एक अर्थ में, सबने बलियाँ चढ़ाई। बलि किसने चढ़ाई और उसमें किसने भाग लिया इसके आधार पर जिन लोगों ने मूसा की व्यवस्था के अनुसार ऐसा किया उन्हें दो समूहों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

व्यवस्था के द्वारा बतायी गई बलियाँ सम्पूर्ण में एक समुदाय के द्वारा अर्पित की जाने के लिए थीं। गिनती 28 और 29 उन बलियों को सूचीबद्ध करता है:

- प्रतिदिन - प्रत्येक सुबह और शाम के समय एक मेमना अर्पित किया जाता था
- साप्ताहिक - सब्त के दिन विशेष बलियाँ चढ़ाया जाना
- मासिक - महीने के प्रथम दिन बलियाँ अर्पित करना
- वार्षिक - तीन वार्षिक पर्वों में से प्रत्येक के लिए नियुक्त बलियाँ (फसह,

सप्ताहों का पर्व और झोंपड़ियों का पर्व) साथ ही नरसिंगे फूँके जाने का पर्व और प्रायश्चित्त का दिन

शुद्धिकरण (जब निवासस्थान और मन्दिर को समर्पित किया गया) और अभिषेक (जब याजकों का अभिषेक किया गया) के विशेष दिनों में भी बलियाँ अर्पित की जाती थी।

एक अर्थ में, सम्पूर्ण में एक जाति के रूप में इस्राएल के द्वारा अर्पित की जाने वाली बलियों में इस्राएल का प्रत्येक व्यक्ति भागीदार होता था। विभिन्न अवसरों पर लोगों के द्वारा भी स्वयं के लिए बलियाँ अर्पित की जाती थी जैसा नीचे बताया गया है:

- जब कोई व्यक्ति पाप करता था (उदाहरण के लिए देखें, लैव्य. 4:27-35)।
- जब कोई व्यक्ति "फ़ल" की कटाई करता था - इस्राएलियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने सम्पूर्ण भाग की पहली उपज परमेश्वर को दें। साथ ही, प्रत्येक इस्राएली व्यक्तिलेवियों को अपनी सारी उपज का दशमांश (दसवाँ भाग) देता था।
- अन्य अवसरों पर - जो कोई शपथ लेने का चुनाव करता था उसके लिए व्यवस्था के द्वारा विधिवत ठहराया गया कि वे उसे किस प्रकार पूरा करे; इसमें एक प्रमाणिक बलि शामिल थी जो शपथ पूरी किए जाने के समय अर्पित करनी होती थी। बलियाँ उस समय भी अर्पित की जाती थी जब कोई व्यक्ति विशेष रूप से परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहता हो अथवा उसके साथ निकट सम्पर्क की खोज कर रहा हो।

प्रक्रिया

पशुओं की बलि अर्पित करने में इस्राएलियों के द्वारा काम में ली जाने वाली प्रक्रिया का संक्षिप्तिकरण गॉर्डन जे. वेनहैम के द्वारा किया गया:

> ... इन सब विधियों में एक सामान्य भीतरी भाग था [जो पशुओं की बलि से जुड़ा हुआ था]। आराधक निवासस्थान के पास पशु लाता था, उस पर अपना हाथ रखता था, उसकी खाल उतारता था और उसके टुकड़े करता था। याजक उसका लहू वेदी पर छिड़कता था और तब वेदी पर पशु के जले हुए भाग पर छिड़कता था।[5]

जैसा अनेक बलियों के विषय में किया जाता था, जो माँस वेदी पर जलाया नहीं जाता था उसे याजक के द्वारा खाया जाता था अथवा मेल बलि के विषय में, इसे याजक और आराधक दोनों ही के द्वारा खाया जाता था।

बलियों के प्रकार

पुराने नियम में बलियों के पाँच मुख्य प्रकारों का वर्णन किया गया है (लैव्य. 1-7):

1. *होमबलियाँ।* होम बलि का उद्देश्य यह था कि सामान्य रूप से अनजाने में किए गए पाप का प्रायश्चित्त किया जा सके। व्यवस्था ने स्पष्ट कर दिया कि गाय-बैल अथवा भेड़-बकरियों से एक निर्दोष नर बलि किया जाए। अगर लोग दरिद्र हों तो वे किसी बड़े पशु के स्थान पर दो पक्षी अर्पित कर सकते थे। होम बलि का प्राथमिक लक्षण यह था कि अर्पित की गई बलि को वेदी पर पूरी तरह जलाया जाता था।

2. *पापबलियाँ।* पाप बलि का उद्देश्य यह था कि अनजाने में किए गए किसी विशेष पाप का प्रायश्चित्त किया जा सके। जो कुछ अर्पित किया जाता था वह उस व्यक्ति के सामाजिक स्तर के अनुसार भिन्न था जिसके लिए इसे अर्पित किया जाता था। दरिद्र व्यक्ति दो पक्षी अर्पित करता था और अधिक दरिद्र व्यक्ति मैदा अर्पित कर सकता था। पाप बलि में सामान्य लोगों में से प्रत्येक के लिए यह निश्चित था कि वेदी के सींगों पर लहू लगाया जाता था और वेदी के निचले हिस्से पर उँडेला जाता था, माँस का चरबीयुक्त भाग वेदी पर जलाया जाता था और शेष भाग याजक के द्वारा खाया जाता था।

3. *दोषबलियाँ।* दोषबलि का उद्देश्य यह था कि अनजाने में किए गए पाप का प्रायश्चित्त किया जा सके जो हानि भरने की माँग रखता हो। दोषबलि में बलि चढ़ाने वाले व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह पहले उस व्यक्ति की हानि भरे जो उसके द्वारा अप्रसन्न किया गया हो, इसके अतिरिक्त पापबलि के समान ही दोषबलि की आवश्यकताएँ समान थीं।

4. *अन्नबलि।* अन्नबलि का उद्देश्य यह था कि परमेश्वर की भली इच्छा को सुरक्षित किया जा सके अथवा बनाया रखा जा सके। इस बलि में मैदा, रोटियाँ, फुलके और पहली उपज शामिल थे। अन्नबलि को बिना खमीर अथवा बिना शहद, तेल, लोबान और नमक के साथ प्रस्तुत किया जाता था। प्रायः यह पशु के बलि के साथ अर्पित किया जाता था। अन्नबलि का एक चिन्ह भाग जला दिया जाता था; याजक और उसका परिवार शेष भाग को खाता था।

5. *मेलबलि।* लैव्यव्यवस्था 3:1 के समान आयत 8 में NASB में "मेलबलि" के लिए इब्रानी का अनुवाद "मिलापबलि" (NIV), "अंशबलि" (REB), "सहभागिताबलि" (NJB) भी किया गया है। "मेलबलि … उस समय अर्पित की जाती थी जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की शान्ति *(शालोम)* की खोज करता था अथवा पहले से ही उसका आनन्द ले रहा होता था।"[6] इसका प्राथमिक उद्देश्य "प्रभु को" धन्यवाद देना था। मेलबलि के लिए गाय-बैल अथवा भेड़-बकरियों से एक निर्दोष नर अथवा मादा को बलि किया जा सकता था। जब बलि अर्पित कर ली जाती थी तब पशु का चरबीयुक्त भाग जला दिया जाता था और पशु के शेष भाग में से शीघ्र ही कुछ भाग याजकों के द्वारा और कुछ भाग बलि अर्पित करने वाले व्यक्ति के

द्वारा खाया जाता था। इस बलि का जातिगत स्वभाव दबा हुआ था (देखें NIV; REB)। तीन प्रकार की मेलबलियाँ थी:

- धन्यवाद वाली मेलबलि - प्राप्त की गई आशीषों के लिए (लैव्य. 7:13, 15)
- (मन्नत) मन्नत बलियाँ - मन्नतें पूरी कर लेने पर (लैव्य. 7:16; 22:18; 23:38; गिनती 15:3, 8)
- स्वेच्छा बलियाँ - हर्ष से भरे हृदय से (लैव्य. 7:16; 22:21, 23; गिनती 15:3)

दो अन्य प्रकार की बलियों का वर्णन किया गया है:

1. *अर्घबलियाँ।* अर्घबलि, अन्नबलि और किसी पशु के बलिदान के साथ की जाती थी। हेनरी सिन्डर गेहमेन ने कहा, "यह अन्नबलि के सम्बन्ध में अर्पित की जाती थी जो सब होमबलियों के साथ थी।"[7] अर्घबलि को वेदी पर उँडेला जाता था और जो बलिदान चढ़ाया गया उसके एक भाग के रूप में जलाया जाता था - जिससे मन्नत पूरी की जा सके, यह स्वेच्छाबलि के रूप में कार्य कर सके, कि यह पहली उपज का एक भाग हो अथवा मात्र परमेश्वर के सम्मुख एक सुगन्धित द्रव्य उत्पन्न कर सके (लैव्य. 23:13, 18; गिनती 15:1-10)।

2. *हिलाने की भेंट।* अन्य बलिदानों के सम्बन्ध में हिलाने की भेंटें परमेश्वर के सम्मुख हिलाई जाती थीं। जो हिलाया जाता था वह कोई पशु, कोई पूला, मेमना या अन्नबलि हो सकता था। हिलाने की भेंट याजकों के प्रबन्धन के साथ (लैव्य. 7:32-36) और पहली उपज की बलि के साथ जुड़ी हुई थी।

इनके साथ ही KJV और NKJV "उठाए जाने की भेंट" (תְּרוּמָה, *थ॰रुमाह)* के बारे में बताती है जो एक इब्रानी शब्द का शायद "एक गलत अनुवाद" है जबकि इसका सही अर्थ है "'समर्पण' या 'समर्पित वरदान।'"[8] NASB निर्गमन 29:27, 28 चार बार "उठाए जाने की भेंटें" अभिव्यक्त करता है।

बलियों का उद्देश्य

पाप को दूर करना

कुछ बलियाँ पाप दूर करने से जुड़ी हुई थीं। इस प्रकार की बलियों की माँग रखने के द्वारा परमेश्वर ने प्रकट किया कि वह पाप को गम्भीरता से देखता है और पाप को दूर करने के लिए किसी पशु की मृत्यु आवश्यक थी। हालांकि परमेश्वर पाप से क्रोधित होता है फिर भी इसकी क्षमा के लिए प्रबन्ध करता है।

सामान्यतया, क्षमा के लिए लहू बहाने की आवश्यकता होती थी।[9] क्यों? लैव्यव्यवस्था 17:11 कहती है, "क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित्त होता है।" लहू बहाने का अर्थ है जीवन का समाप्त होना। कोई पशु मरा जिससे उस व्यक्ति

में आत्मिक जीवन फिर से स्थापित किया जा सके जिसने बलिदान करने के लिए वह पशु दिया। पाप के लिए बलिदान के परिणामस्वरूप व्यक्ति के पाप क्षमा कर दिए जाते थे (लैव्य. 4:26, 33, 35)। किसी पशु को मारे जाने से पहले आराधक जब उस पशु पर अपने हाथ रखता था तो इसके द्वारा पापों को दूर किए जाने का लाक्षणिक रूप से संकेत प्राप्त होता था। ऐसा इसलिए किया जाता था जिससे यह सूचित किया जा सके कि वह पशु उस जुर्माने को अर्थात मृत्यु को उस पापी के स्थान पर ले रहा है जो इसका अधिकारी था।[10]

नया नियम कहता है कि पुरानी वाचा के अनुसार पशुओं का बलिदान पापों को ले नहीं पाता था (इब्रा. 10:1-4)। तब किस प्रकार मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत पाप वास्तव में क्षमा किए जाते थे? मसीही लोग जानते हैं कि उस प्रश्न का मात्र एक ही उत्तर है: लोग मसीह के लहू के द्वारा बचाए जाते थे जो एक अर्थ में, "पीछे की ओर बहने के साथ ही आगे की ओर बहता था" जिससे पुरानी वाचा के साथ साथ नई वाचा के अन्तर्गत लोगों के द्वारा किए गए पापों को धो सके (देखें रोम. 3:25, 26; इब्रा. 9:15)। पुरानी वाचा के अन्तर्गत लोगों को मसीह के लहू के द्वारा क्षमा किया गया जब उन्होंने परमेश्वर के द्वारा आवश्यक बलिदान अर्पित करते हुए उसकी आज्ञा का पालन किया। फिर भी बलिदान, अनजाने में किए गए पापों को - अर्थात अज्ञानता के पाप, अनियोजित पाप अथवा कमज़ोरी के क्षण में किए गए पापों को ले लेने के विषय में ही प्रभावी थे (लैव्य. 4:2)। जो व्यक्ति जानबूझकर या ध्यानपूर्वक पाप करता था या निडर होकर ("स्वेच्छा से") पाप करता था उसे "अपने लोगों में से नष्ट किया जाना था।" (गिनती 15:30, 31; RSV)। उसके पापों को दूर करने के लिए कोई बलिदान काम नहीं आता था (देखें इब्रा. 10:26-31)।

धन्यवाद देने की अभिव्यक्ति

जब इस्राएली एक अच्छी कटाई का अनुभव करते थे तब अपनी आशीषों के लिए परमेश्वर के सम्मुख पहली उपज लाने के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करते थे। विशेष रूप से मेलबलियाँ परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती थीं। जब कभी किसी इस्राएली को किसी बात के लिए धन्यवाद देना होता था ... जब कभी वह हृदय से प्रसन्न होता था ... जब कभी वह कोई मन्नत मानता था ... तब वह परमेश्वर के सम्मुख एक बलिदान लाता था। मेलबलि को तब उन अन्य आराधकों के साथ बाँटा जाता था जो उस परिवार अथवा समुदाय के उत्सवों के साथ बराबरी रखते थे। इस प्रकार के पर्व अवश्य ही आनन्द और मग्न कर देने वाले रहते होंगे। इस कारण आदर्श रूप से, मूसा के युग के बलिदानों को इस्राएलियों के लिए बोझ के रुप में नहीं परन्तु एक विशेष अधिकार के रुप में देखा जाता था।

संगति को आगे बढ़ाना

मेलबलियों की सामुदायिक प्रकृति के कारण, मेलबलियों ने संगति को प्रोत्साहित किया। इन्होंने इस्राएलियों के बीच एकता के एक भाव को बढ़ावा

दिया। इसमें परदेशी भी भाग लेते थे (देखें 15:14, 15, 26, 29, 30), इस कारण यह बलिदान व्यवस्था इस्राएलियों और उनके बीच रहने वाले परदेशियों के बीच एकता को बढ़ावा देने का कार्य करती थी।

धार्मिकता के प्रति उत्साहित करना

बलिदान परमेश्वर के लोगों को धार्मिकता के साथ जीने के लिए उत्साहित करते थे। पाप के लिए बलियाँ इसलिए तैयार की गईं जिससे लोग अपने पापों के बारे में जानकारी रखें और उन्हें याद दिलाया जा सके कि परमेश्वर पाप से घृणा करता है। फिर, उनकी आवश्यकता इसलिए थी कि लोग अपने पापों का अंगीकार कर सकें और उनकी गलती के लिए क्षतिपूर्ति की जा सके (लैव्य. 5:5, 16)। मेलबलियाँ इसलिए थीं कि उन्हें परमेश्वर की भलाई और महानता याद दिलाई जा सके। ये सब बातें ऐसा कारण रही होंगी जिससे इस्राएली परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए और उसकी इच्छा पूरी करने के लिए उत्साह पाएँ। बलिदान की व्यवस्था के बारे में कुछ भी ऐसा नहीं सुझाता कि परमेश्वर अपने लोगों से मात्र परम्पराएँ पूरी करने की माँग रखता हो। जब नबियों ने बाद में परमेश्वर के लोगों को धार्मिकता से जीने के लिए एक परम्परा को पूरा करने के स्थान पर उसे किसी अन्य विधि के साथ बदलना चाहा (देखें यशा. 1:11-15) तब गलती बलिदान की व्यवस्था में नहीं थी परन्तु लोगों में थी जिन्होंने उसमें बिगाड़ कर दिया था।

याजकों की जीविका

बलियाँ याजकों के लिए जीविका का एक माध्यम थी। लेवियों के समान, याजकों को भूमि में से भाग दिए जाने में से अलग कर दिया गया जब इस्राएल ने कनान पर जीत प्राप्त कर ली। जैसा कि उनकी ज़िम्मेदारियाँ निवासस्थान के साथ जुड़ी हुई थी इस कारण वे अपनी जीविका उन बलियों से प्राप्त करते थे जो अन्य लोग निवासस्थान पर लाते थे।

नई वाचा के बलिदान की एक छाया

नया नियम के अनुसार, व्यवस्था ने नए नियम की एक "छाया" के रूप में कार्य किया (इब्रा. 10:1)। विशेष रूप में, पुराने नियम की बलियों ने यीशु मसीह की मृत्यु का जो "परमेश्वर का मेमना है और जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29) और पाप के लिए उसके सिद्ध बलिदान (इब्रा. 9:12-14, 23-28) का पूर्वाभास अथवा एक चिन्ह प्रदान किया। तब पुराने नियम के बलिदानों का एक उद्देश्य यह था कि वर्तमान में मसीह के बलिदान का अर्थ समझने में लोगों की सहायता की जा सके।

बलियाँ और नया नियम

नया नियम में बलिदान की भाषा बार बार देखने को मिलती है। पापों के

लिए हमारा बलिदान यीशु मसीह है। हमसे यह माँग की जाती है कि हम अपने शरीरों को जीवित बलिदान करके चढ़ाएँ (रोम. 12:1, 2)। परमेश्वर के लिए हम जो स्तुति गाते हैं वह एक बलिदान है जो हम उसे चढ़ाते हैं (इब्रा. 13:15) और इसी प्रकार वे भले काम हैं जो हम करते हैं और वे चीज़ें हैं जो हम अन्य लोगों के साथ बाँटते हैं (इब्रा. 13:16)। मिशनरियों की सहायता के लिए जो धन हम देते हैं उसे एक बलिदान के रूप में देखा जा सकता है जो परमेश्वर को चढ़ाया गया है (फिलि. 4:18)। बलिदानों के बारे में पुराने नियम के नियमों से मसीही लोग वर्तमान में यह अनुमान लगा सकते हैं कि - उस समय के समान - परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसके सम्मुख अपना सबसे उत्तम भाग चढ़ाएँ।

समाप्ति नोट

[1]देखें व्यव. 27:5-7; यहोशू 8:30-35; न्यायियों 6:24-27; 1 शमूएल 7:17; 13:8-12; 2 शमूएल 24:18, 25; 1 राजा 18:30-35; 19:10, 14. [2]एल. डेनियल हॉक, "ओल्टर्स," इन *डिक्सनरी आफ दि ओल्ड टेस्टामेंटः पेंटाट्यूक,* संपादक टी. डेसमंड एलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यु. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटरवार्सिटी प्रेस, 2003), 33-34. [3]आर. ई. एवरबेक, "सेक्रिफाइसेस एण्ड ओफ्फेरिंग्स," इन *डिक्शनरी ऑफ दि ओल्ड टेस्टमेंटः पेंटाट्युक,* एड. टी. डेसमंड अलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयः इंटरवर्सिटी प्रेस, 2003), 706. [4]उपरोक्त, 731-32. [5]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 202-3. [6]उपरोक्त, 204-5. [7]हेनरी सिन्डर गेहमेन, एडिटर, "ओफ़रिंग्स," इन *द न्यु वेस्टमिन्स्टर डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल* (फ़िलाडेल्फ़िया: वेस्टमिन्स्टर प्रेस, 1970), 678. [8]डेविड पी. राइट, "हीव ओफ़रिंग्स," में *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी,* सम्पादक पॉल जे. एक्टिमियर (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर & रो, 1985), 378. [9]पुराने नियम की परम्परागत व्यवस्था में कुछ मामलों में प्रायश्चित्त के लिए लहू नहीं बहाया जाता था। प्रायश्चित्त के दिन के लिए (लैव्य. 16), एक बकरा मारा जाता था और अज़ाज़ेल का बकरा बिना मारे ही जंगल में छोड़ दिया जाता था। अत्यन्त दरिद्र व्यक्ति को स्वीकृति थी कि वह दोषबलि के रुप में किसी पशु के स्थान पर मैदा ला सके (लैव्य. 5). [10]वेनहैम, 204.

याजक और लेवी

मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत याजक और लेवी बलिदान की व्यवस्था में केन्द्र स्थान रखते थे। आइए इन दो समूहों की पृष्ठभूमि और कार्यविधि पर ध्यान दें।

याजक

पुराने नियम में "याजक" शब्द प्रायः इब्रानी शब्द כֹּהֵן *(कोहेन)* का अनुवाद करता है।[1] नए नियम में (और LXX में) "याजक" के लिए यूनानी शब्द ἱερεύς *(हाइरियस)* है।

उनका उद्भव

हालांकि इस्राएली जाति "याजकों की जाति" (अथवा "याजकीय जाति"; निर्गमन 19:6) थी फ़िर भी याजकपद के लिए मूसा की व्यवस्था उपलब्ध करवाई गई। व्यवस्था के अन्तर्गत याजक, हारून के वंशज थे (निर्गमन 28:1) जो - अपने भाई मूसा के साथ - याकूब के तीसरे पुत्र लेवी के वंश से था (निर्गमन 2:1; 6:14-27)। हारून के परिवार के द्वारा याजकों के रूप में सेवा करने से पहले अन्य लोग - जैसे कि परिवारों के मुखिया (उदाहरण के लिए अब्राहम और अय्यूब) अथवा जवान पुरुष (निर्गमन 24:5) - याजकीय कार्यविधियाँ पूरी करते थे। प्रथम महायाजक बनने के लिए हारून और उसके पुत्रों का याजकों के रूप में चुनाव परमेश्वर का सर्वोच्च निर्णय था जैसा मूसा के विषय में उसका चुनाव था। परमेश्वर के द्वारा मूसा और हारून के चुनाव के लिए बाइबल कोई कारण नहीं बताती परन्तु लेवी गोत्र के चुनाव के लिए यह ऐसा करती है (निर्गमन 32:25-29)। कुछ इस्राएलियों ने विद्रोह किया और कहा कि "सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है" (गिनती 16:3)। वे स्पष्ट रूप से इस बात पर बल दे रहे थे कि उनके पास भी बराबर अधिकार है कि वे हारून के समान याजक हों परन्तु परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया और स्पष्ट कर दिया कि याजकों के रूप में सेवा करने के लिए हारून और उसके वंशजों का चुनाव उसकी ओर से था (गिनती 16; 17)। निवासस्थान खड़ा करने के बाद हारून और उसके पुत्रों का याजकों के रूप में शुद्धिकरण किया गया (निर्गमन 29; लैव्य. 8)।

हारून ने प्रथम महायाजक के रूप में सेवा की और उसके बाद सेवा का यह पद एलीआज़ार ने प्राप्त किया (गिनती 20:23-28)। जैसा स्पष्ट है कि हारून और एलीआज़ार महायाजक रहे फ़िर भी यह कार्यालय इस नाम से तब तक नहीं जाना गया जब तक गिनती 35:25 नहीं आ गया। जब एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने एक व्यभिचारी जोड़े को मार डालने के द्वारा कुछ इस्राएलियों की निर्लज्ज

अनैतिकता का प्रत्युत्तर दिया (25:6-8) तब परमेश्वर ने उसे, "उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये, सदा के याजकपद की वाचा" (25:10-13) का वायदा दिया।

उनकी कार्यविधि

सामान्य में याजक होना। याजक लोग परमेश्वर और इस्राएलियों के बीच मध्यस्थ थे। रोड्नी के. ड्यूक ने कहा कि याजकों के पास यह ज़िम्मेदारी थी कि वे "दिव्य और मानवीय क्षेत्रों के बीच मध्यस्थ हों।"[2] रेमण्ड अब्बा ने भी इसी समान विचार प्रकट किया: "[याजक] लोगों के सम्मुख परमेश्वर का वक्ता होने के साथ ही परमेश्वर के सम्मुख लोगों का प्रतिनिधि था।"[3] उस भूमिका में याजक निवासस्थान में सेवा करते थे (इब्रा. 9:6); बलिदान चढ़ाते थे (व्यव. 33:10); धार्मिक समारोहों का संचालन करते थे; लोगों को व्यवस्था सिखाते थे[4]; व्यवस्था की व्याख्या के विषय में कठिन मामलों में न्यायी के रूप में कार्य करते थे (व्यव. 17:8-13; 21:5); और लोगों पर परमेश्वर की आशीषों की घोषणा करते थे (गिनती 6:22-27)। अन्य कार्यों में वे (लेवियों के साथ) पवित्र वस्तुओं की रक्षा करते थे; "कर" प्राप्त करते थे और उनका संचालन देखते थे (अर्थात प्रत्येक इस्राएली के द्वारा परमेश्वर को किया हुआ भुगतान प्राप्त करना; निर्गमन 30:11-16); और युद्ध में सेना के साथ विशेष रूप से सलाहकार के रूप में जाना।[5] तुरहियाँ फूँकने की ज़िम्मेदारी भी याजकों की थी (गिनती 10:1-10)। मलाकी 2:6 एक आदर्श याजक का चित्र प्रस्तुत करता है कि वह "शान्ति और सीधाई से [परमेश्वर] के संग संग चलता था, और बहुतों को अधर्म से लौटा ले आया था।"

महायाजक। महायाजक की विशेषता इस सत्य के द्वारा सूचित की जाती थी कि उसका अभिषेक किया गया है (लैव्य. 21:10)। उसका विशेष काम और विशेष अधिकार यह था कि वह वर्ष में एक बार निवासस्थान में महा पवित्रस्थान में प्रवेश करे और लोगों के लिए प्रायश्चित्त करे (लैव्य. 16)। वह "उत्सवों में याजकीय व्यवस्था के मुखिया के रूप में काम करता था और निवासस्थान में जो कुछ होता था उन सब पर प्रधान था … जिसमें अन्य याजकों के कार्य भी शामिल हैं।"[6] साथ ही, उसके पास ऊरीम और तुम्मीम थी और वह उसका प्रयोग "इस्राएल में विशेष परिस्थितियों में प्रभु से प्रमाणिक उत्तर प्राप्त"[7] (निर्गमन 28:30; गिनती 27:21; एज्रा 2:63) करने के लिए करता था।

उनकी भूमिका

याजकों की भूमिका इस बात से जुड़ी हुई थी जिसे मूसा की व्यवस्था की "पवित्रता की व्यवस्था" कहा जा सकता है। परमेश्वर सर्वोच्चता के साथ पवित्र था और है - वह पवित्रता का सार है (लैव्य. 11:44, 45; यशा. 6:3)। निवासस्थान भी, इस्राएलियों के मध्य परमेश्वर के निवास स्थान के रूप में (निर्गमन 29:45, 46) पवित्र था। निवासस्थान में पवित्रता का वर्गीकरण था। महा पवित्रस्थान, जहाँ पर (एक अर्थ में) परमेश्वर वाचा के सन्दूक के ऊपर निवास करता था, वह

(जैसा यह नाम बताता है) अत्यन्त पवित्र था। पवित्रस्थान, पवित्रता में अगले स्थान पर रखा गया था क्योंकि यह आँगन की तुलना में परमेश्वर की उपस्थिति के निकट था। निवासस्थान का आँगन, आँगन के बाहर छावनी की तुलना में पवित्र था क्योंकि यह परमेश्वर के निवास स्थान के निकट था। उसी प्रकार अन्य वस्तुओं से जुड़ा हुआ पवित्रता का स्तर इस बात पर निर्भर था कि उन्हें निवासस्थान में और इसके आस पास के वातावरण में कहाँ पर स्थापित किया गया है।

लोगों को भी उनकी "पवित्रता" के अर्थ में श्रेणीबद्ध किया गया। वर्तमान में किसी के बारे में "आपसे अधिक पवित्र" के रूप में कहना, किसी की आत्म-धार्मिकता के लिए उस पर दोष लगाने का एक उपहासपूर्ण तरीका है। मूसा की व्यवस्था के अन्तर्गत सब इस्राएली पवित्र थे; परन्तु कुछ लोग, वास्तव में अन्य लोगों से अधिक पवित्र थे। एक अर्थ में सब लोग पवित्र थे; फ़िर भी सम्पूर्ण समुदाय में से लेवी गोत्र को चुना गया कि वह परमेश्वर के लिए समर्पित किया जाए - कि वह "अत्यन्त पवित्र" ठहरे। याजक लोग शेष लेवियों की तुलना में पवित्र थे; और महायाजक सब लोगों से पवित्र था।

याजकों को उनकी पवित्रता के अनुसार श्रेणीबद्ध किया गया और उनकी "श्रेणी" उनके वस्त्रों से सूचित की जाती थी। याजक लोग अन्य लोगों से अलग दिखाई देने के लिए विशेष वस्त्र पहनते थे परन्तु महायाजकों के वस्त्र अन्य याजकों की तुलना में और अधिक विस्तृत थे (निर्गमन 28)।

याजकों की भूमिका यह थी कि वे पूरी व्यवस्था की पवित्रता बनाए रखें: "लेवीय याजकपद का आवश्यक कार्य इस कारण यह [था] कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोगों की पवित्रता का सुनिश्चय करें, उसे बनाए रखें और उसे निरन्तर पुनः स्थापित करते रहें (इसके सन्दर्भ में देखें निर्गमन 28:38; लैव्य. 10:17; गिनती 18:1)।"[8] इस कारण याजक "पवित्र और अपवित्र के बीच और शुद्ध और अशुद्ध के बीच" अन्तर करते थे और "इस्राएलियों" को ऐसा की करना सिखाते थे (लैव्य. 10:10, 11)। "इन भिन्नताओं को स्पष्ट करने और उन्हें बनाए रखने का काम याजकों का होता था।"[9] वे नियमित रूप से बलिदान अर्पित करते थे जिससे इस्राएल परमेश्वर के सम्मुख पवित्रता के साथ खड़े रहने को सुरक्षित रख सके। वे लोग निवासस्थान की भी देखभाल करते थे जिससे इसे अपवित्रता से दूषित होने से बचाया रखा जा सके। वास्तव में वे लोग "तड़ित चालक" के रूप में काम करते थे अर्थात उनके द्वारा निवासस्थान और लोगों की पवित्रता बनाए रखने के द्वारा इस्राएल पर से परमेश्वर का कोप घुमा दिया जाता था। उनका काम बहुत ही खतरनाक था: अगर वे परमेश्वर के बताए अनुसार परमेश्वर तक पहुँचने में किसी भी प्रकार असफल हो जाते थे तो वे स्वयं पर और लोगों पर विपदा ले आते थे। फ़िर भी अगर वे अपनी भूमिका स्वीकार्य रुप से पूरी करते थे तो वे इस्राएल की पवित्रता के लिए बड़ा योगदान देते थे।

उन पर प्रतिबन्ध

उनके "पवित्र" स्तर के दृष्टिकोण से याजक कुछ प्रतिबन्धों के अन्तर्गत थे जो

इस्राएलियों पर लागू नहीं होते थे। रिचर्ड इ. एवरबेक ने लिखा,

> सब याजक कठोर प्रतिबन्धों के अन्तर्गत थे जिससे वे (निकट परिवार के लोगों को छोड़) किसी लोथ के सम्पर्क में आने के द्वारा अथवा किसी तलाकशुदा महिला अथवा भूतपूर्व वेश्या से विवाह करने के द्वारा (लैव्य. 21:1-4, 7) अपवित्र नहीं किए जाएँ। इस प्रकार महायाजक अपने मृत पिता अथवा माता की अन्तिम विधियों में शामिल होने के द्वारा स्वयं को दूषित नहीं कर सकता था और वह किसी कुँवारी से विवाह करने तक ही सीमित था (अर्थात वह किसी विधवा से विवाह नहीं कर सकता था, उससे भी कम वह किसी तलाकशुदा महिला से अथवा भूतपूर्व वेश्या से विवाह नहीं कर सकता था; लैव्य. 21:10-14)।[10]

साथ ही, यह आवश्यक था कि जब याजक निवासस्थान में सेवकाई करें उस समय विधिवत रूप से शुद्ध हों (निर्गमन 30:17-21)। "मिलापवाले तम्बू" में प्रवेश करने से पहले वे "दाखमधु अथवा किसी प्रकार के मद्य" का सेवन नहीं कर सकते थे (लैव्य. 10:9)। साथ ही, याजकों के लिए आवश्यक था कि "वे न तो अपने सिर मुँड़ाएँ, और न अपने गाल के बालों को मुँड़ाएँ, और न अपने शरीर चीरें" (लैव्य. 21:5)। किसी भी प्रकार का शारीरिक दोष रखने वाला व्यक्ति याजक के रूप में सेवा नहीं कर सकता था; परन्तु अगर वह याजकीय परिवार का सदस्य हो तो उसे स्वीकृति थी कि वह उस भोजन में से खा सके जो याजकों के लिए नियुक्त था (लैव्य. 21:16-23)।

उनके विशेषाधिकार

इन प्रतिबन्धों के कारण और जो बड़ी ज़िम्मेदारी याजकों के कंधों पर थीं उनके कारण उन्हें कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हुए। उनमें से एक यह था कि याजकों को कुछ नगर प्राप्त हुए। जब इस्राएल ने वायदे के देश पर जय प्राप्त कर ली तब लेवी गोत्र को, जिसके साथ याजक भी शामिल थे, अन्य गोत्रों के समान भूमि में कोई हिस्सा प्राप्त नहीं हुआ। इसके स्थान पर लेवियों को पूरे कनान और यरदन नदी के आस पास फ़ैले हुए अड़तालीस नगर प्राप्त हुए (35:1-7; यहोशू 21:1-42)। उन अड़तालीस नगरों में से तेरह नगर याजकों के लिए थे और वे यहूदा, शिमौन और बिन्यामीन प्रदेशों के अन्तर्गत स्थित थे (यहोशू 21:4, 19)। फ़िर भी याजकों की जीविका प्राथमिक रूप से उन भेंटों से आती थी जो इस्राएलियों के द्वारा चढ़ाई जाती थी। याजक निवासस्थान में चढ़ाई जाने वाली पहली उपज प्राप्त करते थे (गिनती 18:8-20) और उन्हें बलिदानों में से एक भाग प्राप्त होता था। उन्हें लेवियों को दिए जाने वाले दशमांश का दशमांश प्राप्त होता था (18:21-32)।

उनका इतिहास

पुराने नियम के समय में, याजक सदैव परमेश्वर की उच्च बुलाहट के अनुसार नहीं जीते थे। नादाब और अबीहू "ऊपरी आग" चढ़ाने के कारण मारे गए (लैव्य. 10:1-3); उज्जा मारा गया क्योंकि उसने सन्दूक को हाथ बढ़ाकर थाम लिया

(2 शमूएल 6:1-7); एली के पुत्र, जो कि याजक थे, वे लुच्चे थे (1 शमूएल 2:12-17)। याजकों को अकसर नबियों के द्वारा फटकार लगाई जाती थी।[11] उत्तरी राज्य का स्वधर्म त्याग इस सत्य के द्वारा साकार रूप में देखा जा सकता था कि राजा यारोबाम ने सब प्रकार के लोगों में से जो लेवीवंशी न थे उन्हें वेदियों पर सेवा करने के लिए याजक ठहरा दिया (1 राजा 12:31; 13:33)। पुराने नियम और नए नियम युग के बीच के समय तक महायाजक का कार्यालय तुरन्त प्रभाव में क्रय किया गया और विक्रय कर दिया गया। यहूदिया के शासकों ने "यह कार्यालय उन लोगों के लिए नियुक्त कर दिया जिन्होंने किसी एक समय में उनके साथ राजनैतिक और आर्थिक पक्ष रखा"; नए नियम के समय के महायाजकों ने "रिश्वत देकर अपना पद प्राप्त किया।"[12]

सुसमाचार के विवरणों के अनुसार, याजक लोग यीशु के शत्रु थे और उन लोगों में से थे जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए षड्यंत्र रचा। सब यहूदी याजक दुष्ट के रूप में प्रस्तुत नहीं किए गए। यूहन्ना बपतिस्मादाता का पिता जकर्याह एक धर्मी याजक था (लूका 1:5, 6)। कलीसिया के आरम्भ के पश्चात, "याजकों का एक बड़ा समाज … इस मत को माननेवाला हो गया" (प्रेरितों. 6:7)।

लेवी

याजकों के साथ उनके सम्बन्ध

हालांकि यह आवश्यक था कि याजक, लेवी गोत्र से हों फ़िर भी सब लेवी, याजक नहीं थे।

उनका उद्भव

लेवी उस समय एक विशेष गोत्र बन गए जब उन्होंने, सोने के बछड़े को पूजने वाले अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार उठाने के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति सिद्ध कर दी (निर्गमन 32:25-28)। मूसा की चुनौती के प्रति उनके प्रत्युत्तर के परिणामस्वरूप मूसा ने उनसे कहा, "आज के दिन यहोवा के लिये अपना याजकपद का संस्कार करो … जिस से वह आज तुम को आशीष दे" (निर्गमन 32:29)। ऊपरी तौर पर उस समय से लेवियों को इस प्रकार देखा जाने लगा जैसे वे परमेश्वर के प्रति विशेष रूप से समर्पित गोत्र हो।

मात्र एक ही गोत्र प्रभु के लिए समर्पित क्यों किया गया? अन्तिम महामारी में जब परमेश्वर ने मिस्र के पहिलौठों को मार डाला तब उसने इस्राएल के पहिलौठों को छोड़ दिया था और इस कारण इस्राएल के पहिलौठे पुत्र उसके लिए समर्पित किए जाने थे। फ़िर भी उसने प्रत्येक परिवार से पहिलौठे को लेने के स्थान पर लेवी गोत्र को स्वयं का होने के लिए एक विशेष अर्थ में चुना। मूसा की व्यवस्था के अनुसार, तब प्रत्येक गोत्र के पहिलौठे के स्थान पर लेवी, परमेश्वर के लिए दे दिए गए (3:11-13, 40-45)।

उनका कार्य

स्टीफ़न जे. ब्रामर ने यह कहते हुए लेवियों के कार्य का संक्षिप्तिकरण किया कि वे "मिलापवाले तम्बू की देखभाल करने वाले और याजकों के सहायकों के रूप में" अलग किए गए।[13] लेवियों को पच्चीस वर्ष की आयु में अपनी सेवा आरम्भ करनी होती थी और पचास वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होना होता था (8:24, 25 पर टिप्पणियाँ देखें)। इसके बाद वे अन्य लेवियों की सहायता कर सकते थे परन्तु कोई भारी कार्य करने की स्वीकृति उन्हें नहीं थी।

1:47-54 के अनुसार लेवियों को मिलापवाले तम्बू के सम्बन्ध में ज़िम्मेदारियाँ दी गईं: (1) उन्हें मिलापवाले तम्बू के ऊपर अधिकारी होना होता था और उसकी देखभाल करनी होती थी और उसकी सजावट की भी देखभाल करनी होती थी। (2) उन्हें मिलापवाले तम्बू को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ढो कर ले जाना होता था, इसे खड़ा करना होता था और वापस नीचे उतारना होता था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें तीन परिवारों या गोत्रों में बाँटा गया और मिलापवाले तम्बू की देखभाल करने के लिए और उसके परिवहन के सम्बन्ध में प्रत्येक परिवार को स्वयं की विशेष ज़िम्मेदारियाँ दी गईं (अध्याय 3; 4)। (3) उन्हें मिलापवाले तम्बू के चारों ओर छावनी किए रहना होता था जिससे उसे किसी अनाधिकृत व्यक्ति की पहुँच से बचा सकें। मिलापवाले तम्बू को दूषित होने से बचाने के लिए इसकी सुरक्षा में लेवी लोग जितनी भी सेना की आवश्यकता होती थी वे उसका प्रयोग कर सकते थे।

गिनती 18:1-6 इस बात पर बल देता है कि लेवियों का कार्य यह था कि वे याजकों की सेवा करें। वे याजकों को एक भेंट के रूप में दिए गए थे अर्थात वे "मिलापवाले तम्बू की सेवा करने के लिये और यहोवा को सौंप दिये गए थे" (18:6)। इसके साथ ही याजकों के साथ लेवियों को यह कार्य सौंपा गया कि वे लोगों को परमेश्वर की व्यवस्था सिखाएँ (व्यव. 33:8, 10; देखें 2 इतिहास 17:7-9; 35:3; नहेम्य. 8:7, 8)। मन्दिर के निर्माण के बाद लेवियों को अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ दी गईं। (नई ज़िम्मेदारियों के लिए देखें 1 इतिहास 23:3-6, 24-32; 25:1-8।)

उनका स्तर

हालांकि लेवी इस्राएल में एक विशेष स्तर का आनन्द ले रहे थे फ़िर भी एक गोत्र के रूप में उन्हें याजकों की समानता में नहीं देखा जाना था। ब्रामर ने याजकों और लेवियों के बीच अन्तर चिन्हित किए:

> कार्यकारी रूप से याजकों के रूप में नहीं परन्तु सहायकों के रूप में उनका [लेवियों] का सामान्यतः लोगों के बीच और याजकपद (अर्थात याजकों को पवित्र किया गया और लेवियों को शुद्ध किया गया; याजकों का अभिषेक किया गया और उन्हें साफ़ किया गया, लेवियों पर छिड़काव किया गया; याजकों को नए वस्त्र दिए गए, लेवी स्वयं के वस्त्रों को धोते थे; याजकों के लिए लहू लागू होता था परन्तु उसे लेवियों के ऊपर हिलाया जाता था) के मध्य एक मध्यस्थ

का स्तर था। लेवियों को स्पष्टता के साथ मिलापवाले तम्बू के निकट जाने की स्वीकृति दी गई और किसी अन्य ज़िम्मेदारी की तुलना में यह विशेष अधिकार उन्हें साधारण इस्राएली से अलग करता था (गिनती 8:19; 16:9-10)।[14]

उनकी जीविका का साधन

देश को जीत लेने के बाद लेवियों को अड़तालीस नगर (इनमें से तेरह नगर याजकों को मिले) दिए गए और साथ ही आस पास के चरागाह के स्थान भी दिए गए (यहोशू 21:1-42)। अन्य सब गोत्रों के द्वारा दिए जाने वाले दशमांश से लेवियों का पालन पोषण किया जाता था (गिनती 18:20-24; देखें लैव्य. 27:32, 33); और वे, बदले में, उस भाग का दशमांश याजकों को देते थे जो वे प्राप्त करते थे (गिनती 18:26)।

याजकों की ज़िम्मेदारियों और विशेष अधिकारों का सारांश

जिम्मेदारियाँ

- मिलापवाले तम्बू में सेवकाई करते थे।
- बलिदान चढ़ाते थे।
- धार्मिक समारोहों में संचालन करते थे।
- लोगों को व्यवस्था सिखाते थे (लैव्य. 10:8-11; व्यव. 24:8; 33:8, 10; 2 इतिहास 15:3; मलाकी 2:7)।
- व्यवस्था की व्याख्या के विषय में कठिन मामलों में न्याय करते थे (गिनती 27:21; व्यव. 17:8-13; 21:5)।
- लोगों पर परमेश्वर की आशीषों की घोषणा करते थे (गिनती 6:22-27)।
- (लेवियों के साथ) पवित्र वस्तुओं की रक्षा करते थे।
- "कर" प्राप्त करते थे और उनका संचालन करते थे (अर्थात प्रत्येक इस्राएली के द्वारा परमेश्वर को किया हुआ भुगतान प्राप्त करना; निर्गमन 30:11-16)।
- युद्ध में सेना के साथ जाते थे जिससे सलाहकार और परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में सेवकाई कर सकें।
- तुरहियाँ फूँकने का काम करते थे (गिनती 10:1-10)।

विशेषाधिकार

- कनान में (लेवियों के साथ) नगर प्राप्त किए।
- लोगों से पहली उपज प्राप्त की।
- इस्राएलियों के द्वारा चढ़ाई जाने वाली बलियों में एक भाग पाया।
- लेवियों के दशमांश का दशमांश प्राप्त किया।

लेवियों की ज़िम्मेदारियों और विशेष अधिकारों का सारांश

ज़िम्मेदारियाँ

- याजकों की सहायता की।
- मिलापवाले तम्बू की देखभाल की और एक स्थान से दूसरे स्थान तक (इसके सब सामानों के साथ) परिवहन किया।
- मिलापवाले तम्बू के चारों ओर छावनी की और इसे किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति की पहुँच से बचा कर रखने के लिए इसकी सुरक्षा की।
- याजकों के साथ लोगों को शिक्षा दी (व्यव. 33:8, 10; देखें 2 इतिहास 17:7-9; 35:3; नहेम्य. 8:7, 8)। (मन्दिर के निर्माण के बाद उन्हें अन्य ज़िम्मेदारियाँ भी दी गईं; देखें 1 इतिहास 23:3-6, 24-32; 25:1-8।)

विशेषाधिकार

- भूमि का भाग पाने के बदले में कनान और यरदन के आस पास बिखरे हुए अड़तालीस नगर प्राप्त किए (जिसमें से तेरह नगर याजकों ने प्राप्त किए)।
- अन्य गोत्रों के द्वारा दिए गए दशमांश प्राप्त किए।

समाप्ति नोट

[1]यह अध्ययन मात्र उसी विषय से सम्बन्ध रखता है जिसके बारे में बाइबल कहती है न कि याजकपद के बारे में विवेचनात्मक सिद्धान्तों के बारे में है. रोड्नी के. ड्यूक, "प्रीस्ट्स, प्रीस्टहुड," इन *डिक्सनरी आफ़ दि ओल्ड टेस्टामेंटः पेंटाट्यूक*, संपादक टी. डेसमंड एलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यु. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटरवार्सिटी प्रेस, 2003), 648-49 में याजकपद के बारे में विचारों की एक समीक्षा दी गई है. [2]ड्यूक, 646. [3]रेमण्ड अब्बा, "प्रीस्ट्स एन्ड लिवाइट्स," इन *द इन्टरप्रिटर्स डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एडिटर जॉर्ज आर्थर बट्टरिक (नाशविल्लेः एबिंगडन प्रेस, 1962), 3:881. [4]लैव्य. 10:8-11; व्यव. 24:8; 33:10; 2 इतिहास 15:3; मलाकी 2:7; देखें यिर्म. 18:18; यहेज. 7:26; मीका 3:11; हाग्गै 2:10-12. [5]ड्यूक, 653-54. [6]रिचर्ड इ. एवरबेक, "प्रीस्ट, प्रीस्टहुड," इन *बेकर थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एडिटर वॉल्टर ए. एलवैल (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाऊस, 1996), 635. [7]उपरोक्त. [8]अब्बा, 3:877-78. [9]ड्यूक, 650. [10]एवरबेक, 635.

[11]देखें यशा. 28:7; यिर्म. 2:26, 27; 5:31; 6:13; विलाप. 4:13; यहेज. 22:26; होशे 4:9; 5:1; 6:9; मीका 3:11; सप. 3:4; मलाकी 1:6, 7. [12]एवरबेक, 636. [13]स्टीफ़न जे. ब्रामर, "लिवाइट," इन *बेकर थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एडिटर वॉल्टर ए. एलवैल (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाऊस, 1996), 479. [14]उपरोक्त.

दशमांश देना

"याजकपद अथवा अन्य धार्मिक विधि के जीविकापार्जन के लिए सम्पत्ति अथवा उपज में से एक दसवाँ भाग" देना ही दशमांश देना है।[1] मूसा की व्यवस्था लोगों से माँग करती थी कि वे दशमांश दें परन्तु यह अभ्यास व्यवस्था दिए जाने से पहले से था। अब्राहम (उत्पत्ति 14:17-20; देखें इब्रा. 7:1-10) और याकूब (उत्पत्ति 28:22) दोनों ने स्वेच्छा से परमेश्वर को दशमांश दिया। अन्य जाति के लोगों में भी दशमांश का चलन था।

पंचग्रन्थ में अनेक स्थानों में दशमांश के बारे में नियम देखने को मिलते हैं और कभी कभी ये विरोधाभासी लगते हैं। स्वयं यहूदी लोग, दशमांश के बारे में विभिन्न पवित्रशास्त्र पदों में मेल बैठाने के प्रयास में एक अनुपयुक्त निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस्राएलियों के लिए आवश्यक था कि वे तीन विभिन्न दशमांश चुकाएँ। जोसेफ़स ने तीन दशमांशों में अन्तर किया: एक याजकों और लेवियों के लिए (गिनती 18:20-32); दूसरा इस्राएलियों के लिए कि वे उत्सवों के समय चुने हुए स्थान में खाएँ और आनन्द मनाएँ (व्यव. 14:22-27); तीसरा वह जो प्रत्येक तीसरे वर्ष में दरिद्र, विधवाओं और अनाथों को दिया जाता था (व्यव. 14:28, 29)।[2] हालांकि साक्ष्य "संकेत देते हैं कि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में तीन दशमांश जाने जाते थे। … फ़िर भी यह आवश्यक रूप से गिनती और व्यवस्थाविवरण में दिए गए आँकड़ों की सही व्याख्या नहीं है।"[3] विभिन्न नियमों में जहाँ पूर्व में कमी रह गई थी उनमें सूचना जोड़ते हुए एक दूसरे पर निर्माण करने के साथ ही दशमांश के सम्बन्ध में व्याख्या करना सम्भव है।

क्या किया जाना था? व्यवस्था में दशमांश के बारे में पहला पद निर्देश देता है कि क्या किया जाना था। लैव्यव्यवस्था 27:30-33 संकेत देता है कि इस्राएल की उपज का एक दसवाँ भाग - जिसमें भूमि और पशु की उपज शामिल है - परमेश्वर को दिया जाना आवश्यक था।

किस उद्देश्य के लिए (1)? गिनती 18:21, 24 में परमेश्वर ने कहा कि दशमांश का प्रयोग लेवियों की जीविका के लिए किया जाए।

इसे कहाँ लाना था? व्यवस्थाविवरण 12:5, 6, 11 विवरण देता है कि दशमांश को उस स्थान में लाना था "जो स्थान तुम्हारा प्रभु परमेश्वर चुने।" इस स्थान के बारे में इस्राएलियों ने बाद में जाना कि यह यरूशलेम था। जब तक इस्राएली जंगल में रहे तब तक उन्हें बताना नहीं पड़ा कि उन्हें दशमांश कहाँ लाना है क्योंकि उस समय सारे गोत्र मिलापवाले तम्बू के चारों ओर छावनी किए रहते थे। जब वे कनान में बस गए तब ही उन्हें निर्देशों की आवश्यकता थी कि उन्हें अपने दशमांश कहाँ लाने हैं। किसी पर्व अथवा उत्सव में चढ़ाई जाने वाली बलि के मेल

के साथ निःसन्देह दशमांश को किसी इस्राएली आराधक के द्वारा खाया जा सकता था (व्यव. 12:17, 18) जब वह इन्हें मनाने के लिए यरूशलेम को गया हो। दशमांश का मात्र एक भाग खाया जाता होगा; शेष भाग, व्यवस्था की माँग के अनुसार, लेवियों को दिया जाता था।

किस उद्देश्य के लिए (2)? व्यवस्थाविवरण 14:28, 29 (देखें 26:12) एक और कारण बताता है कि दशमांश अर्पित करना आवश्यक क्यों था। प्रत्येक तीसरे वर्ष के अन्त में दशमांश का प्रयोग (यरूशलेम ले जाने के स्थान पर) स्थानीय तौर पर उन लोगों के पालन पोषण के लिए जो विशेष रूप से ज़रूरतमन्द हों - अर्थात किसी परदेशी, अनाथ और विधवा के लिए - साथ ही लेवियों के लिए किया जाना था।

हालांकि पुराने नियम के समय में दशमांश दिया जाता था (आमोस 4:4), फ़िर भी कभी कभी इसे अनदेखा कर दिया जाता था (मलाकी 3:8-10)। नए नियम में यीशु ने कहा कि कुछ लोग खेती की सबसे छोटी उपज के दशमांश के बारे में भी शुद्ध अन्तःकरण रखते थे (एक ऐसी आदत जिसका उसने खण्डन नहीं किया) परन्तु व्यवस्था के "भारी मामलों" को अनदेखा कर देते थे (मत्ती 23:23; KJV)।

मसीही युग में दशमांश देने की आवश्यकता नहीं है। पुराने नियम के शेष नियमों के समान दशमांश देने के बारे में दी गई आज्ञाएँ जाती रहीं जब मसीह की वाचा प्रभावी हो गई। इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग देने से बच गए हैं। इसके स्थान पर, जिस प्रकार हम समृद्ध हुए हैं उसके अनुसार हमें सप्ताह के प्रथम दिन परमेश्वर को देना है (1 कुरि. 16:1, 2)। जब यह कहा गया कि मसीही लोगों को अपनी आय का दसवाँ भाग देने की आवश्यकता नहीं है इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें उससे कम देना चाहिए। शायद हमें अधिक देना चाहिए क्योंकि हम एक उत्तम वाचा के अन्तर्गत जीवन जीते हैं।

समाप्ति नोट

[1]एच. एच. गुथरी, जुनियर, "टाइथ," इन *द इन्टरप्रिटर्स डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एडिटर जॉर्ज आर्थर बट्टरिक (नाशविल्ले: एबिंगडन प्रेस, 1962), 4:654. [2]जोसेफ़स *एन्टिक्विटीज़* 4.8.8, 22. [3]अर्ल एस. कलैन्ड, "व्यवस्थाविवरण," इन *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 3, *व्यवस्थाविवरण- 2 शमूएल*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1992), 103.